

श्रियामनुसाहे ॥ नरथाय जाचेरक्षण नागिबेसकाजालील समनालागि ॥ तेथेच जापुले अंगल गिमुपिका
 रुढा ॥ १ ॥ आनिआत्तरवेसिखंगुबेसजानसवेसिजेसारेंदु ॥ निळसेनापतिआनिमेदुखसेनेसिवेसका ॥ २ ॥
 बेसजानळसिळाताटकुबेसलाजाबुवंतनुसनायकुबेसजाहनुमंत ज्याचाजनकुलोकाकवायो ॥ ३ ॥
 बेसलाकपोप्रसंजनबेसलानुससनातनु ॥ बेसलापावकुलोचनअनिहेमकुटा ॥ सुखेनुबेसलावेयगज
 बेसलागवासआणिगजु ॥ विनतुत्थनुप्रसंगप्रसंगसिबेसला ॥ ४ ॥ बेसलागंधमादनुदिंदुबेसले
 केगारिकुमुद ॥ ज्याचामेघामारिवाशकुतेदधिमुरबेसला ॥ बेसलासुमुखदुर्मखभु ॥ बेसलागोमु
 रवरपनु ॥ तळपनध्वजजानिवा ॥ ५ ॥ हेहिजे ॥ सजानिवावर ॥ आपुलालेदळेसिमहावि ॥ विमा
 निबेसलेअवतारजेदेवाचेअवतदले ॥ सुखव ॥ ज्याणकोटिजिनुवेहोतेभुतळवटी ॥ पितुवेदिपु
 षकानुदपोटिपरमानंदजाला ॥ तगवयाळा ॥ सागज ॥ त्रिपुर्णजालेता ॥ तैसाकपिदळेसिरपुविमु
 पुष्पकानुदजाले ॥ ६ ॥ विगगनाचेउदरितागंगेयायोचक्राचेगिरि ॥ तैसेश्रियामेसहवाचरि ॥ विमानासुढ ॥
 मिरवीजेपुष्पकि ॥ ७ ॥ नानामेनुवेपाठरमस्तवसावरिजेसेहंसकडक ॥ तैसेश्रियामेसकळीविमानासुढ ॥ ८ ॥ वेष्टित
 सहअविर्णसंख्येसिन ॥ ९ ॥ आदिसआउदेयेकचक्र ॥ तैसापुष्पकितासार्थी ॥ गोभनाजाला ॥ १० ॥
 हेमेकपिविमानावरि ॥ हर्षनादकेलीयाअवस्वरि ॥ जानिदिगाजयजयकारि ॥ दादल्लादाहाही ॥ ११ ॥ जेसेत

2

पुनाथा न्यामनिःसंयमाचेइच्छेकनुनि॥ पुष्पकविमानगगनिःप्रवेशनेजाले॥ १५॥ पुर्णचंद्रबिंबप्रका
शालेःतेउरयादीहुनिपश्चीमेवळले॥ तेसेपुष्पकवेगेतिवालेउत्तरआकाशपथे॥ पुष्पकावरिवेष्ट
तप्यदावळीःतिवाचनपुनाठलागलानिरावी॥ मिरवतिमुक्ताफळाव्याजावीहेवावतिरत्नपोष॥ १६॥
तेसेपुष्पकविमानजातसेगंधर्वनगरसारिषैरिस॥ प्रमंजनेपल्लवासनतैसेजळगतिवरुनि॥ १७॥ पर
मप्रतिपात्रजानकिः॥ पुनाथेवैसविळाजंमितीप्रतिचोलनणेअवळोकिः॥ अवपेक्षितिमंडळ॥ १८॥
पेलविशालत्रिकूटागिरिःसुवर्णमययाचीपाठा॥ निराकयोजनेलंकापुरिःअपुर्वप्रीयेपाहे॥ १९॥
इचियेप्ररेविरणमंडळः॥ युध्यजालेयथुंबव॥ जारसरासेसकुळः॥ थोरथोरमहावि॥ २०॥ वल्लंतेज्या
चिनितेणेःरेविधरिलीरौतटणे॥ कुबेरापारुनपुत्रार्थपणेः॥ वंकाआनिपुष्पकयेतले॥ तेवोसंकारि
लेसर्वोहः॥ बळसागरवज्रदेहि॥ मेरमौसतुपिरमाहबहुसालनरली॥ येथेपउलाग्रहस्तप्रधानुः॥ वज्र
दोष्टीधुआशजंनपतु॥ विरुपाक्षमकरलोचनः॥ येरपाधुमिसिपउले॥ सुपारभमहापारभमहोत्तुः॥
जतिकायाविर्यसागनु॥ त्रिशिरावबाच्यामेरुः॥ तेसेयेधुमिसिपउले॥ २१॥ मत्तमहामत्तयुधमत्तः॥ कुंभ
निकुंभविर्यवैत॥ देवातकनरांतकराजसुतः॥ सर्वहिसंकारिले॥ रजाननाच्यामुख्यबधुः॥ त्रैलोक्य
पिउकनिराशिधु॥ दोरसंयामकेठावधुः॥ जालायेच्छानियाचा॥ २२॥ बहुतविद्याकपटकवीरुडजीत

२४
पुरुषार्थे जागृता ॥ तोल समने बधिला नि कुंवा ॥ पाहे पैल प्रीये ॥ अकितां बहु शस्त्रे अस्त्रे ॥ उम सुना
हि युद्धी सत्य अहोरात्रे ॥ जालियारे हो रश बगत्रे ॥ ये सुखि ठे विला ॥ परिवेष्टित बहु ता परि ॥ आत्मि राशि
लो तो हा सुवे का गिरि ॥ समुद्र अवलो कि सि नि या वरि ॥ नळे से नु बांधला ॥ ३० ॥ कौं ते पाहे या उ परि ॥ शो क करि
त हो ति मंदो ररि ॥ ते पैल पाहे सुंदरि ॥ निमरण चतुरि ॥ उत्तर ति र न्या हा की आता ॥ रभश यु नी म जने म हो ता ॥
समुद्र मुनि मंत सरिता ॥ नेट लाये थे ॥ पैल मळिया च की विंध्या च वृद्धि से ॥ पुढे कि स्विंदा पा हे वो रा स से ॥
पुर्वि ये थे अंग रा या पि ता व से ॥ आता सुयि ना स प्रा त्या ॥ बा की बधिला ये भु तळ व डि सुयि ना आत्मा जा ति
मि टि ॥ तो हा उ घी मुख पर्व त रू षी ॥ देखू द सरा ता की व ॥ ह पु मंत ने ट ला तो हा र मु ॥ पुढे पा हे श ब रिया आ
अ मु ॥ ये थे क बांध व धिला ज्या चा ने म ॥ सा प उ ले ते न्या ॥ ३१ ॥ सिते पा हे गो रा व र चेत टि ॥ हे म मृ ग म मि
ळा क प ठि ॥ पैल गुं फा पा हे पं च व डि ॥ कुं ज ये थु न ने ल हो ते ॥ ३२ ॥ ख र दू व ना रि क रा से स हो ते ॥ ते स म स्त
ये थे व धि ले सिते ॥ स्पर्भंग वे स्था न पा हे गु न्त रिते ॥ वि रा धु व धि ला य थे ॥ ३३ ॥ हा रि से अ ग स्ति वा आ अ म
जान की त्या चा हि अ नु जा च अव लो की ॥ चि त्र कू ट न्या हा की वा त्मि की ॥ वा स्त य क रि ॥ ३४ ॥ आ त्मि वि ते क
हो ता ॥ काळ ये थे क मि ला ॥ भ र थ ने टा व यां आ ला ॥ पु न र पि प र ते नि गे ला ॥ रा ज्या स ह व र्त मा न ॥ ३५ ॥ भा गि र थी उ त
रो न आ लो ॥ आ नि जे आ अ मि रा हि लो ॥ अ ति थ्ये प र म सु र प व लो ॥ य थे नार द ज मु नि अ से ॥ ३६ ॥ पा हे श

(3)

मोहका कळिदिः पाहेतु सरिगुभनदिः हे वागिरथी मागुता जन्मनेदिः तटिरेह जायजरिः ॥ १ ॥ दस अस
तिचहुसालः तेगुहाचे शृंगवेल ॥ पुढे नंदिया मपाहे पैलः जेथे भरथुआहे ॥ २ ॥ एसे सुखार्णवनभमार्गिः
विमानिखंजनासिलागि ॥ वैसले असता वामांगी ॥ डाद सुखदेतसे ॥ ३ ॥ उंदुवदेने आता पाहेः पुण्य तोय
तारयुवहे ॥ इचेतिरिस्काळित आहेः अयोध्याजी पृष्ठी ॥ ४ ॥ सकळा आबदेवाचा जे साउं बच्चजे सिंधु
सुधासाचा ॥ किमेय तोपियुष्याचा ॥ जमृत धारिवरुषे ॥ नित्यां नंदेनरोत्तमनरेडः राजाधिराज न
मचंड ॥ तवत वसिते सुख समुद्रः मयारास ॥ ५ ॥ केषासु निजयोध्या पर्यंतः सिते सिधिरामेराख
विले संकळीत ॥ तव पुष्पक पटिग जेत ॥ भारद्वाज प्रमाळो ॥ ६ ॥ यानंतरे देवाधिदेव उखिले एसे
राघवे ॥ जे भारद्वाज आश्रमि उत्तराव ॥ ७ ॥ उयथे ॥ ८ ॥ एसे संकलुनिया चित्ति सों मित्र सैवा
रयुक्ती ॥ वैसा अरुणा प्रतिगभस्ति ॥ समया सारखे नरे ॥ ९ ॥ रघुनाथ जे योजीलेः ते सुग्रिवादिका
सिमानले ॥ मग विमाना ते आजापिले ॥ उत्तर ह्मणोनिया ॥ १० ॥ पुष्पक जातने आशुलिया नरंगेः ते आजा
सरी सेगहिले उगे ॥ अधो पथे ब्रह्मवगे ॥ भूत व्यासिजाले ॥ ११ ॥ भारद्वाज आश्रम निवृत्तः गति र्वडित जाले ॥
१२ ॥ जे से पराधीन ब्रह्ममार्त नदः रत्नगर्त पडव पावे ॥ १३ ॥ पक्ष पक्षो निगगनचे पोवीः क्रसुनगड
उसिरान वाचेवेठि ॥ वैसता होय ते से ते वटी ॥ पुष्पक स्थिर जाले ॥ १४ ॥ किरवी विबल युनि आकाशा

३४

अगेवरुणा च या क उ व सा ॥ नै से त्रु पि आ श्र मा चे व उ व सा ॥ पा व ले पु ष्य क ॥ १ ॥ अ वि कं का रु मि र वे ले सा
 ग्रं थि ॥ नै सा पु ष्य क्रि शो मे रा रा थि ॥ तो स क क पि सी पृ थ्वी पं थि ॥ उत्त रे नि उ त्त भा दि ला ॥ २ ॥ सिं धु म थ
 नां ति सु र भा रा सरि से ॥ म ध्ये ल स मि ना रा य ण भ व रि से ॥ नै सा क पि च का व र्ति शो भ त से श्रि रा म मि ते स हि त ॥
 ए से अ क स्मा त आ श्र म प्र दे सि ॥ अ पु र्व दे सि ले धा र्जा पे शि थो ॥ आ नं र न मा य आ का शि ॥ गु रु ते सि धि सा
 गे गे ले ॥ ह्य ण ति परि सा हो स्वा मी ॥ व्यो मा हु नि वि मा न आ ले भु गी ॥ पृ थ्वी आ द र्छा र्छा प ल्धं ग मी ॥ स्त्री आ नि न
 र व य रि से ति ॥ ३ ॥ ए से वि चार्यि सां गो तु प रे ॥ त व भा र द्वा ज उ ति ला व रे ॥ ह्य णे चा ला हो सा मो रे ॥ आ ला आ ला
 र द्यु ना थु ॥ ४ ॥ ए से बो लो नि उ त्त वे ला ॥ सरि सा वि ष्य व गो च मे ला ॥ आ श्र म प्र दे सि आ ला त व जे ला ॥ अ सं भा
 व्य दे सि ले ॥ ५ ॥ अ सं ख्या त रु स क पी पु र्छे ल गे ॥ ग म ल स म न ज्ञा न वि त्रि वर्गे ॥ दे सि ले जै सि ध्या न यो गे ॥ स
 र्व रा ध्या त हो ता ॥ ६ ॥ अं त रे गि अ से ना र नु ते सा बा ल्य रा ग रि से मृ ति वं तु ॥ ए से नि कृ पि उ वं व व तु ॥ भ त्ति र से
 पा व ला पु रु ॥ ७ ॥ सि धि नि कृ ट आ ला कृ षे श्वे रु ॥ पु दे स मे स्ति वे लान म स्का रु ॥ धे रु क ल्या न क ल्या न ह्य णे आ रु ॥
 चि ती भे टा व या चा ॥ ८ ॥ श्रि रा मे ज्ञा नो नि ल व ला हि ॥ भा र द्वा ज सि उ त्त रे ले बा ही ॥ आ वीं ग ना नि पा ले प्रे म
 ठो हि ॥ म न मु रा ले कृ पि चे ॥ ९ ॥ या नं त रे सं मि त्रा सु ता ते भा र द्वा जे श्वे हे व हु ते ॥ आ वीं ग न रि ध ले सर्वा ते ॥
 शब्द मु ख रा ख विले ॥ १० ॥ भा र द्वा ज ह्य णे र द्यु ना था ॥ ध न्य अव ता र स म र्था ॥ तु ट लि त्रे लो क्या चि ये था ॥

मले कार्य संपादिले ॥ ५५ ॥ उकार न्यगोदातु गवः वसोनिता वेल्लेनिः कटवः ॥ वधिलेरासे सकुचमवकी
कः ॥ तेरावण कुंभकर्णी ॥ ५६ ॥ थोर लाज पावलो विप्रकृव आही ॥ जयवंतराहा सिजाले तितुही ॥ चतु
रंश वर्षे पंचमी ॥ आली निरुति जाला ॥ ५७ ॥ ऐसे भारदाजा चे सुशब्दी ॥ रामु मणे तुम चे आसि वासि ॥
कार्य संपादिले अधिकार पदि ॥ विबुद्ध वेस विले ॥ ५८ ॥ सिगोर वव्छी श्रिगामाची ॥ जाली गगना प
रिस उचि ॥ फळरसि विभ्वेश विरंची ॥ लंका प्रदेशि नृत्य जाले ॥ ५९ ॥ देवाय चेतक वलीः गळीत पाउ पाव
ल्या सुरा आकोटि ॥ कपिरुसा सिमहामोडि ॥ लीचे निरुति जाली ॥ ६० ॥ एसिये गोर व वल्लिची फळे ॥ रामे तुषी
सिजर्पिली साके ॥ ज्याचे माधुर्य जाम के ॥ जमता पति सा ॥ ६१ ॥ मग भारदाजा श्रिगामासी रुणे ॥ आली
धन्य दिनु तुहि जाले तिपाहुने ॥ जाता आश्रमावाला तुलसणे ॥ सिते सहित ॥ ६२ ॥ एसामुषी चोराद सम
रंभुः परिसोनि बोले वैरे हि वल्लुभ ॥ रुणे जो तुम या आसा वीरि तो भु ॥ जनकाचिय परी ॥ ६३ ॥ प्रथम जाहि
यणे मार्गे ॥ उकारण्या जाता त्रिवर्गे ॥ ते तुम चे आश्रमि प्रसंगे ॥ पाहनोरु जाला बहु ॥ ६४ ॥ तेणे शंकुने
आहि मागु ते ॥ सेम जालो ये उनि सिते ॥ पुनरपि तुम चे तपे मरी ते ॥ आर्त वृशा वंते पावलो ॥ ६५ ॥ आता
जो लाभ द्याल तुहि ॥ तो सर्वथा ये उनि जी आही ॥ यणे कल्यान मुख सदा ब्रह्मी ॥ आनंद मय असो ॥ ६६ ॥
रसे विप्र प्रिये गळे ॥ उचें बळ न वेल्ले ॥ पिआसु खसमुडे ॥ पुढे हतुम ता प्रति राम वंदे ॥ बोलाता जाले ऐसे ॥ ६७ ॥

५४
ह्मणोगाक्षिमहाबुद्धीः तामहात्तयेनेषीसिद्धी॥ गुननवर्णवे स्नेहाच्याहोति॥ ५॥ एकगाजाली
मातुतिः गहाणेजालेब्रह्मकृषिवेप्रिति॥ तरितापुढेजावेसिप्रगती॥ सासिसांगावया॥ ६॥ सुगवेका
वनिकावेआहिआलोहमनोनिगुहेकासिसागावे॥ नंदिग्रामिजाउनिबोकावे॥ नरथासिसमूख॥ ७॥
जावकैसात्यावेदरः तोअपिप्रानेअवयादेसा॥ स्नेहअसाधारणआमवागारः विसाधारण॥ ८॥ वृत्तेल
करीताअनुवादी॥ कोनेबैसावेगज्यपदिनात्रुधावीवासनानरीवाहतसेकोनिवृडे॥ ९॥ ऐसेबोलेनिह
णुमंताः आह्मासामोमयेरमागुता॥ तवजासिअतुनोदयेहोता॥ प्रयानकरुन॥ १०॥ ऐसिआजाहनुमंता
प्रतिरेताजालाकरुणामूर्ति॥ हेसर्वासमानलमातुति॥ सावीनिपाला॥ ११॥ जातपितयापरीसपंथी॥
उत्तरबायमुनाभागिरथी॥ मृगवेलपावोनि॥ हकासिराशरथी॥ आलेहमनोनिसागितले॥ १२॥ गुहकर
सेआइकतासनिचोटलावज्रवपुनेचेरणी॥ जानंदरेलातेनेराटनि॥ देशदिशाजाली॥ १३॥ नक्तजानी
निहणुमंतेः आळीगिलेउक्तेनिहस्ते॥ जैसेबहकाळभेटल्यामागुतेः प्रितिपात्रआळिगिले॥ १४॥
गुहकत्रुनासनपांतले॥ बादरेहणुमंतासिबैसविले॥ पादप्रक्षालुनघेतले॥ जळमुखिमस्तकी॥ १५॥ पुमि
ल्यासामाच्याचरित्रगोठी॥ क्षपिनेकथिल्याजैस्याजमृताच्याबोठी॥ सापरीसोनिगुहकावेपोठी॥ सुपीजा
लीआर्तउत्तरे॥ १६॥ गुहकणेक्षपिंद्रातुजवेमुनिः हेउत्तमांगसाउवेवोवाकुनि॥ परिरामदेखावाएसेलोचनि

वाटपाहतसेबहुतरिवस॥७॥अयोध्याधिरातोसमर्पुःआत्मासासार्पुनाथु॥आत्मापुस्तामनोरथुजोही
ताहृदयामध्ये॥८॥आताउडिगानलविउसिरुःतवयेरुसुणेवायोतनुजविउ॥चाळनरथासमृतकरुःनंदि
ग्रामासिजाबो॥९॥सेबोळोनिजोउहस्तिःउठीलेगुहकमातुति॥चालिलेनंदियामापतीःपावलेमहुतवि
धामध्ये॥१०॥प्रवेशलेविस्तिर्णपर्नकुटीःहनुमंतेभरथदेविवाट्टी॥शिरामाच्यापाहुकाजराजुगी॥बांधो
निबैसलाअसे॥११॥त्रुनासनवल्कलधारीःशैवमुद्रानिमित्तिरी॥धारणयोगियाचेपरीःज्ञातिरसेस
रोदितु॥१२॥भरथाचेसाधुचंदेविलेयेकरेहनुमंतववनबोलेगाटे॥ह्मणेरामआलेमजपुटेःसागोपा
उविलेतुह्मा॥१३॥साकपिसुखातुनिनियेराकुःजेसादुधासुगाकीरंदु॥कितोजेमृताचाहरदुःउचेबोळोनिजो
टला॥भरथासिवाटलेकोनिरेसेःमगआसनिहुनिउलाःधावोनिहनुमंतायेकसरिसेःक्षेमावीगनदिधले॥
परमहउषेप्रितिकरुनिःहनुमंतासिकरिधनुने॥समुद्रवैसविलाजोसनीःभरथबोलताजाला॥१४॥
ह्मणोजमृतसिंधुपाटुःआनिलासुधारियापुढेनिहु॥तैसातुशुभवार्तासुभदु॥येउनिआलासिकपी॥१५॥
सुधाबिंबीचाहरनुःचक्रोरजवळीआलानिजगनु॥तैसाशिरामापासोनिमुल्लसनुःमेयेआलासितु॥
आताकपिश्रेष्टादताःसागसमूळगुनवंता॥क्षेमेरामलक्षमनसिता॥कोनास्थानासिआले॥१६॥
वाल्मिकाग्रमिचीत्रकुटीःमजरामेसिजालिहोतिभेडि॥तैयावयाचिअवधिबेलीमोडीःचतुर्दशवर्षाची॥

चित्रकुटापासुनिपउले अंतर ॥ दिवसगेले कटिन थोर ॥ महर्षि पालवति सवत्सर वाटले मज लागि ॥ १५ ॥
 तरि नवपंचवर्षाचा सिंधु मी ॥ आजी पुर्णतरलो पंचमी ॥ आश्वि मास मासा स्वामी ॥ मज पेठे लक्ष्मणवा ॥ १६ ॥
 अष्टाविंशति जयने चित्त आर्तले ॥ आता च सुद्वय देखेन प्रिय माची पाउले ॥ म्हणे नराज्य साभाळी आशु मी ॥
 क्लीन नमस्कृतु ॥ १७ ॥ कैकेय ने मिथ्या मित्रा सुदृष्टा ॥ मदद बरि धले राराथा ॥ जाल्या सनदे तार पुनाथा ॥
 नवासा सिपा उविले ॥ १८ ॥ परिराज्य रामाचे सुमुखी राखी ॥ आज्ञा धारक अनुज जाहो ॥ हे ससवाचा
 सासु सुयभुमी ॥ जन्म बरि जाना ॥ १९ ॥ चतुर आग निज नदी ॥ विचारुन धरि मनी ॥ म्हणे देवा परत मुर्झनी ॥
 गुल्फास पुजा करा ॥ २० ॥ पुज्यता कृतु निवेगवी ॥ पुज्यता समर्पिष्ठु प्यांजुकी ॥ सुखा वरील साउनि बकी
 मृदां गिया सिवो वाळिले ॥ २१ ॥ एसे कैकेय ने पाहि ॥ पुरी जाले न निचा प्रवाही ॥ तीस प्रेरिले पाप पुप देही ॥ म
 थारासी ॥ २२ ॥ जाले तरि हो नारायण खे ॥ परि हे कैकेय नेचे दुःखे ॥ देह राराथे ठेविले जग मुखे ॥ तिस
 पेरा आले ॥ २३ ॥ वना गेली याराम लक्ष्मण जानकी ॥ जाल्या सिजाली निर्नाकी ॥ मग चित्त मासेव सिध्दिकी ॥
 बहुता परि शोधिले ॥ २४ ॥ कुळ कुळे सेल रवी मंडळी ॥ पाप प्रवेश लगंगा लकी ॥ तरि मजरणा कोने काळी ॥
 राज्याची होइल ॥ २५ ॥ पुर्वज परंपरा आशुकी ॥ तिहि बहुते परि जयो ध्या भोगिली ॥ परि हे कोना सागा ते नाहि
 गेली ॥ जे मि ते सिच लाहे ॥ २६ ॥ अहो राज्य भोग ने हे थोर ॥ जे नले म्हणति ज्ञाते चतुर ॥ वउकड पाहता सर्व हिने धर ॥

विंशतिपर्यंत ॥ १७ ॥ रामवनवास गेली यासे बटी मिश्रज्य पाहे चना दृष्टी ॥ पादुका ठेउनिया जयजुटी ॥ येनंदि या
मिहा हिलो ॥ परिबाट पाहता आला रघुनाथ ॥ आता पुरता मासामनोरथ ॥ यथुनिहासि स्वार्थ ॥ जेसे वापडे सा
थी ॥ एसि सत्वनैरनवनीचि पत्रे ॥ किते वैराग्य वेनिची नसत्रे ॥ नाना परिते तिथे पवीत्रे ॥ ज्ञानगंगेची ॥ १८ ॥ किते
चतुर्यत अगिची पद्मे ॥ किते धर्मसत्रिचिरसमे ॥ नानासती मार्गिची सुगमे ॥ विश्रान्ति स्वरूपे ॥ १९ ॥ हनुमं
ते आरको निजंत ॥ कर्नि मृणे हा साधु चामु गुटमनि ॥ मग मर्यादा प्रतिमधुरा वानि ॥ बरता जाला ॥ २० ॥ हनु
मं होराजी या राजास जा ॥ अहोराजराजानुजा ॥ अहोराज नय जयजा ॥ सुखद्वीप मुद्रा ॥ २१ ॥ समरजाट
विरपा सिंधु ॥ मृणे नरथ येवमासा बंधु ॥ मारि दिहावतु निसाधु ॥ राज्याति सहा हिला ॥ २२ ॥ एसे बोले
वेळो वेळा ॥ ते म्या प्रससदेखिले ओळा ॥ उत्तम रसाद ॥ तेलिळा ॥ योगियाचि जेसी ॥ २३ ॥ मरथ पुन्या
दीपा सुनि पाहे ॥ प्रितिलसन नदिनि पाली आ ॥ ते मति मजमळ बाहे ॥ हरपार्न वामि कालि असो
तुसिये हरर या अर्थ निपाळा ॥ जेसा बिबाबा हिरे सर्प गेळा ॥ आशा पाश चिती हुनि तुटला ॥ २४ ॥ उर्णनंतु तुट
जेसा ॥ २५ ॥ तुजवतार पुरुष महामती ॥ मि किति करी न तुसी स्तुती ॥ तुये येपरितु सिद्धिती ॥ वतु ॥ सिंधु पावली ॥
दिधल्या राग्याचि साउनि ॥ करि रे सापरि सिजाना ही कोन्ती ॥ वेयुध करुनि समरंगनी ॥ राज्य येति गोत्रनी ॥
आता प्रसंगे पडले बोलने ॥ ऐका सुप्रिये जा निबिची घणे ॥ असामा करुनि राज्याकारणे ॥ निजबंधु वधवीले ॥ २६ ॥

मृणोनिरेसाहमाज्या निळासु॥ याचे स्वार्थे बहुतासि लंगला स्वाधु॥ परितु विकारी हि न पुरुषा जाजी म्या
 देखि जासि॥ ऐसि उत्तरे बोले वृषी वीरु॥ १२॥ थापुठे सर्व समा॥ १३॥ थपिला चरित्र सागनु॥ १४॥ पुनाथा या॥ १५॥
 पुनरपी वरे वायो ननु॥ हणो ब्रह्म ऋषी नारदा जु॥ तया वेदा प्रमी न पुरा जु॥ ये उ निराहिला जसे॥ १६॥
 आजी चारि वस प्रिती पुर्वक॥ १७॥ पुनाथु जानिक पि कटक॥ गहिसे परि उरयि क॥ प्रयान करु ने येति॥ १८॥ हे से
 वायो तनये बोलीले॥ तेणे बंधु द्वय संतो रले॥ १९॥ जाले रण जाते॥ दिग्मंडळा ७५॥ सानंतरे ते अवेशिरे॥ २०॥
 थशत्रु धासि जहा करि॥ मृणोसि प्रशिंघारानि पुशि अया ध्या राज ध्यानी॥ ७५॥ सांगा वेसु मैता प्रधाना॥
 चालवा विव तुंग निसेना॥ प्रिति पात्रा प्रचु॥ जना लोसे पेड नि निघा॥ ७६॥ कौशल्या मुख्य कउ नि मता॥
 सिबिकारुढ चाल वास मस्ता॥ प्रथम पुढे करा पु॥ गहिना गुरु वशिष्ठा सी॥ ७७॥ जनु नोद या पुर्विये कसरे॥
 समारंभे शिरामा सामोरे॥ समस्त सह परिकारे॥ सत्वर गाला दक्ष ण मार्गे॥ ७८॥ एसे न रथ सागे शत्रु धा प्रति॥
 यरे तिनु वेहि धरिले यिती॥ परमानं ऐसि प्रगति॥ जयो ध्ये सि गेला॥ ७९॥ मागे नै दिगामि हणु मंतु॥ १२॥ रथ सा
 गेना शिरामा व्या मातु॥ कमिन राहिले सव रिश्रंनु॥ राग वीर्या होयो॥ ८०॥ आता प्रभात जालिया सकळी क
 शिरामा सामोरे पाले लकठक॥ तो समारंभु कोनु क॥ वरला असे वाल्मिकी॥ ८१॥ इति शिरामा यन निर्मिति उत्तर
 भाग कथा प्रथम क्रान्त॥ ते परिसा सुजन हो सुचिंत॥ हस्त्र दास मुडल मृणो॥ ८२॥ शिरामा पंचमस्तु॥ प्रा० ८३॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com